IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, April 2025
Impact Factor: 7.67

प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न उपागम के सन्दर्भ में नई शिक्षा नीति के प्राथमिक स्तर के पहल पर प्रकाश

सुप्रिया श्रीवास्तव and *डॉ.राघवेंद्र मालवीय **

*शोधार्थीनी,शिक्षक शिक्षा विभाग,

** असिस्टेंट प्रोफेसर(शिक्षक शिक्षा विभाग)

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), जमुनीपुर कोटवा, प्रयागराज,उ.प्र.

संक्षिप्त सार

प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करना रहा है। समाज का बौद्धिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष शिक्षा के माध्यम से माना गया है। ऋग्वेद में विद्या को मानव की श्रेष्ठता का आधार माना गया है। शिक्षा मानव जीवन का आधार है। शिक्षा मानव के जीवन की प्रगति पथ पर पहली सीढ़ी है। शिक्षा के मायने विभिन्न हैं, यह केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है वरन् यह बहुआयामी है। इसके बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, व्यापारिक आदि विभिन्न आयाम है। ये सभी आयाम हमें अपने जिंदगी के किसी न किसी मोड़ में सहयोग प्रदान करते हैं। शिक्षा न केवल हमें हमारे लक्ष्य तक पहुंचाती है वरन् ये हमें जिंदगी में सही फैसले लेना और जिंदगी से सामंजस्य बैठाना भी सिखाती है।आदिकाल से ही भारतीयों में शिक्षा के प्रति आदर भाव रहा है, जब शेष दुनिया खाना-बदोश थी तब भारत में वेदों की रचना हुई। सिंधु सभ्यता के प्रमाण भी बताते हैं कि भारत में तकनीक, भवन निर्माण आदि कलाओं में कितने पारंगत थे। भारत कई शताब्दियों तक विदेशी आक्रांताओं के अधीन रहा। देश के सभी वर्ग के लोगों के अथक प्रयास से भारत को आजादी मिली। स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् दुनिया के सभी संविधानों से प्रेरणा लेकर विश्व के सबसे बड़े संविधान का निर्माण किया गया लेकिन भारतीय शिक्षा मैकाले की शिक्षा से आजाद नहीं हो सकी। भारत में आजादी के पश्चात कोठारी आयोग की रिपोर्ट और सिफारिशें के आधार पर 1968 में भारत की प्रथम शिक्षा नीति आई, 1986 में सरकार ने नयी शिक्षा नीति बनायी जिसमें 1991 में कुछ संशोधन किए गए और 2009 में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम लाया गया। इन सभी प्रयासों का मुख्य उद्देश्य लोगों तक शिक्षा की पहुंच को बढ़ाना था ताकि सभी शिक्षा से जुड़ सके और शिक्षा समाज के सभी वर्गों के लिए सुलभ हो सके। 21वीं सदी का भारत इन सबसे बढ़कर कुछ अलग और ऐसी शिक्षा नीति की उम्मीद करता है जो उसे वर्तमान परिस्थितियों से सामना करने में सक्षम बना सके। वास्तव में शिक्षा समावेशी हो, रोजगारपरक हो, भारतीय चिन्तन एवं दर्शन एवं भारत केन्द्रित शोध पर आधारित हो ताकि शिक्षा सभी के विकास में महत्तवपूर्ण योगदान दे सके तथा ऐसी न हो जिससे वे पढ़े-लिखे डिग्रीधारी बेरोजगार हो सकें। उक्त के आलोक में वर्तमान सरकार द्वारा हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लायी गयी है। यह शिक्षा नीति छात्रों के विशिष्ट क्षमताओं की पहचान और विकास, शिक्षा के ढांचे को लचीला, सीखने पर जोर, छात्रों में जोर देना व तार्किक और रचनात्मक सोच का विकास, रोजगारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ावा

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 10, April 2025 Impact Factor: 7.67

देने के लिए है। इस नीति के अनुसार विद्यालयीन शिक्षा को 10+2 के स्थान पर 5+3+3+4 कर दिया गया है। 5(आँगनवाड़ी + प्री स्कूल + कक्षा 1 और 2), 3(कक्षा 3 से 5), 3(कक्षा 6 से 8) और 4 (कक्षा 9 से 12) शामिल है। इस शोध कार्य के लिए द्वितीय स्तर के सूचनाओं को शामिल किया गया है।

मुख्यशब्द :-*प्राथमिक शिक्षा,उपागम,शिक्षा निति पहल* आदि।

प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा की प्रथम नीव है। प्राथमिक शिक्षा का विकास का, विकास करके ही समाज का विकास किया जा सकता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाकर उसे समाज का श्रेष्ठ नागरिक बनाती है।कोठारी आयोग ने भी अपने प्रतिवेदन में कहा है कि उचित शिक्षा ही ऐसा साधन है जो राष्ट्रीय विकास में सहायक हो सकती है।

शिक्षण उपागम शिक्षण के क्रिया कलाप के लिए एक दृष्टिकोणहै, जिससे यह निश्चित होता है की, कौन से स्तर पर शिक्षण के कौन से तरीके अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते है। शिक्षण प्रक्रियामें सुधार लाने, ज्ञानाताम्क, भावनातमक, क्रियात्मक एवं मूल्याकंनात्म उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने के लिए जो तरीके या विधियाँ अपनाई जाती है, संयुक्त रूप से उन्हें हीशिक्षण उपागम कहते हैं।

उपागम मूल रूप से शिक्षण की प्रणाली को कहते है।

प्राथमिक स्तर के विभिन्न उपागम

1. आगमन विधि
2. निगमन विधि
3. हरबर्ट विधि
4. प्रोजेक्ट निधि
5. डाल्टन विधि
6. किंडर गार्डन
7. मोंटेसरी पद्धति
8. प्रश्नोत्तर / सुकरात विधि
9. खेल विधि
10. हयूरिस्टिक विधि आदि।

उपरोक्त विधियों से प्राथमिक स्तर पर शिक्षण कार्य को सरल तथा सुगम बना कर बच्चों को शिक्षित अर्थात ज्ञान प्रदान किया जाता रहा है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, April 2025
Impact Factor: 7.67

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

"रटने और परीक्षा के लिए सीखने के बजाय वैचारिक समझ और शैक्षिक परिणामो में सुधार " पर ज्ञान जोर देती है ताकि बच्चे अर्जित ज्ञान और कौशल को वास्तविक जीवन में लागू कर सके।

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भारत में 10+2 स्कूली शिक्षा प्रणाली को एक नई 5+3+3+4 प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापितकिया गया है। 5+3+3+4 प्रणाली यह प्रस्तावित करती है कि प्रयोगात्मक अधिगम को, वैचारिक समझ को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योकि प्रयोगात्मक अधिगम सक्रिय भागिदारी के माध्यम से अनुभव प्राप्त करके सीखने को संदर्भित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, प्रयोगात्मक शिक्षा को अपनाना चाहिए जिसमे हस्तगतिविधि आधारित कार्यक्रम कला-एकीकृत और खेल एकीकृत शिक्षा, कहानि आधारित शिक्षाशास्त्र आदि शामिल है।

1. इसमें शिक्षक मूल्यांकन के साथ-साथ स्व-मूल्यांकन और सहकर्मी मूल्यांकन और प्रोजेक्ट-आधारित और पूछताछ-आधारित क्विज़, रोल-प्ले, समूह कार्य, पोर्टफोलियो आदि में बच्चों की प्रगति शामिल होगी।
2. विचार केवल अकादमिक-केंद्रित अवलोकनों से आगे बढ़ने और मूल्यांकन को अधिक समग्र और बहुआयामी बनाने का है।
3. भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का दावा है कि विकलांग बच्चों को शैक्षिक प्रणाली में भाग लेने के समान अवसर मिलने चाहिए।
4. पहुँच सुनिश्चित करने के लिए, एक-से-एक शिक्षक और कोचिंग, सहकर्मी-ट्यूशन, ओपन स्कूल, उपयुक्त बुनियादी ढाँचा और उपयुक्त तकनीकी हस्तक्षेप विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए प्रभावी हो सकते हैं।
5. एनईपी अनिवार्य विशेष शिक्षा पर जोर नहीं देता है, यह **"समावेशी शिक्षा"** पर जोर देता है जिसका अर्थ है कि प्रत्येक बच्चा समान है और उसे सीखने के समान अवसर मिलने चाहिए।
6. **NEP की प्राथमिकता पर पहल**

निपुणभारत (NIPUN BHARAT) 2021 में लॉन्च किया गया NIPUN (समझ और पढने में प्रविणता के लिए राष्ट्रीय पहल) भारत NEP 2020 द्वारा साक्षरता और संस्थात्मकता निर्देशित देश में मुलभुत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) के लक्ष्यों को प्राप्ट करने के लिए राष्ट्रीय मिशन है।निपुण भारत का लक्ष्य 2026-27 तक देश के ग्रेड 3 तक के सभी बच्चो के लिए FLN हासिल करना है।

लक्ष्य

- यह सुनिश्चित करना कि सभी बच्चों के पास एक मजबूत शैक्षिक आधार हो
- ग्रेड 3 के अंत तक बच्चों को मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल विकसित करने में मदद करना

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, April 2025
Impact Factor: 7.67

- 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता हासिल करना

गतिविधियाँ

- शब्द पहचान और पढ़ने की प्रवाहशीलता विकसित करने के लिए ध्वन्यात्मक-आधारित पढ़ना
- पाठों के अर्थ को समझने में बच्चों की मदद करने के लिए समझ-आधारित पढ़ना
- बच्चों को शामिल करने के लिए कहानी सुनाना और ज़ोर से पढ़ना
- बच्चों को बढ़िया मोटर कौशल, अक्षर पहचान और वाक्य और कहानी लेखन विकसित करने में मदद करने के लिए लेखन विकास
- गिनती और संख्या संचालन

कार्यान्वयन

- कार्यक्रम को मौजूदा मुख्यधारा संरचनाओं के उपयोग और सुदृढ़ीकरण के साथ मिशन मोड में लागू किया गया है
- राज्य और केंद्र शासित प्रदेश सरकारें सभी प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता हासिल करने के लिए एक कार्यान्वयन योजना तैयार करती हैं
- कार्यक्रम प्रगति को बारीकी से ट्रैक और मॉनिटर करता है

आधारभूत शिक्षण अध्ययन

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने मार्च 2022 में बड़े पैमाने पर आधारभूत शिक्षण अध्ययन (FLS) आयोजित किया।

विद्याप्रवेश (Vidya Pravesh)

विद्या प्रवेश उस गहरे जोर पर आधारित है जो NEP-2020 सभी बच्चो PFLN के के लिए लक्ष्यो की प्राप्ति पर देता है।विद्या प्रवेश को NCERT द्वारा ग्रेड 1में प्रवेश करने वाले छात्रों के लिए विकसित किया गया। इसे तीन महीने तक चलाया जाएगा जिसमें बच्चे को स्कूल के माहौल से परिचित कराने और कल्याण बनाये रखने के लिए अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिदिन 4 घंटे समर्पित होगे

विद्या प्रवेश को NIPUN भारत के सीखने के परिणामों के अनुरूप गणित, भाषा और साक्षरता की नीव बनाने के लिए डिजाइन किया गया।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, April 2025
Impact Factor: 7.67

विद्या प्रवेश के मुख्य उद्देश्य:

- बच्चों को औपचारिक स्कूली शिक्षा में सहजता से शामिल करना
- बच्चों को स्वास्थ्य कल्याण, भाषा साक्षरता, गणितीय सोच, और पर्यावरण जागरूकता से जुड़ी मूलभूत दक्षताओं का विकास करना
- बच्चों को एक स्वागत योग्य और पोषण करने वाले वातावरण का अनुभव कराना
- बच्चों की विभिन्न सीखने की ज़रूरतों को पूरा करना
- बच्चों को आनंदमय और तनाव-मुक्त सीखने का माहौल देना

❖ बालवालिका (Balvatika)

1. बालवाटिका कार्यक्रम की परिकल्पना ग्रेड 1 से पहले एक साल के कार्यक्रम के रूप में कि गई है, जिसका उद्देश्य बच्चों को संज्ञानात्मक और भाषाई दक्षताओ के साथ तैयार करना है जो कि खेल आधारित ढष्टिकोण के माध्यम से पढ़ना, लिखना और संख्या बोध विकसित करने के लिए आवश्यक शर्ते है।
2. NCERT ने बालवाटिका सहित प्रीस्कूल के तीन वर्षों के लिए दिशानिर्देश और प्रक्रियाए विकसित की है।
3. इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रेड 1 से पहले का एक वर्षीय कार्यक्रम बालवाटिका कार्यक्रम है।

बालवाटिका के बारे में ज़रूरी बातें:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुताबिक, 3 से 6 साल के बच्चों के लिए बालवाटिका की व्यवस्था की गई है ।
- बालवाटिका में तीन तरह की कक्षाएं होती हैं - बालवाटिका प्रथम, बालवाटिका द्वितीय, और बालवाटिका तृतीय ।
- बालवाटिका में बच्चों को खिलौनों की मदद से पढ़ाया जाता है ।
- बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, और सामाजिक विकास पर ध्यान दिया जाता है ।
- बच्चों को उनकी मातृभाषा के साथ-साथ दूसरी भाषाओं का भी ज्ञान कराया जाता है ।
- बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य और पोषण का खास ध्यान रखा जाता है ।
- बालवाटिका में बच्चों के माता-पिता और समुदाय को भी शामिल किया जाता है ।

बालवाटिका में दाखिला लेने के लिए, संबंधित स्कूल की वेबसाइट पर जाकर बच्चे का रजिस्ट्रेशन कराया जा सकता है ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, April 2025
Impact Factor: 7.67

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक शिक्षा केविभिन्न उपागमो के माध्यम से शिक्षक प्राथमिक शिक्षण कार्य के कौन से तरीके अपना कर बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान उपलब्ध करा पाता है। इन उपागमो के प्रयोग से शिक्षण प्रक्रिया में सुधार ज्ञान उपलब्ध करा पाता है मूल्यांकनात्मक उद्देश्य को प्रभावी ढंग से प्राप्त किया जा सकता है । NEP की पहल NEPUN BHARAT, Vidya Pravesh तथा Balvatika के अन्तर्गत भी बच्चों को भाषाई दक्षताओ, संज्ञानात्मक दक्षताओ, संख्यात्मक बोध का ज्ञान कराया जाता है।

अतः स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक उपागम और NEP 2020 को प्राथमिकी को पहल एक दूसरे की पूरक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.india.gov.in/spotlight/nipun-bharat
2. https://nipunbharat.education.gov.in/
3. https://dsel.education.gov.in/nipun-bharat
4. https://ncert.nic.in/pdf/vidyapravesh.pdf
5. https://www-vidya-pravesh-a-play-based-school-preparation-programme-for-grade-i-children/rajeev-ranjan/
6. https://navbharattimes.indiatimes.com/
7. https://no1calicut.kvs.ac.in
8. https://no2agracantt.kvs.ac.in/hi

https://rashtriyashiksha.com/national-education-policy-2020-primary-education/